

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये सप्तषष्टितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে সপ্তষষ্টিতমং দশকম্ ॥

ভগবতস্তিরোধানাদির্গনং

স্ফুরৎপরানন্দরসাত্মকেন

ংরযা সমাসাদিতভোগলীলাঃ।

অসীমমানন্দভরং প্রপন্না

মহান্তমাপূর্মদমম্বুজাক্ষ্যঃ ॥ 67.1 ॥

নিলীযতেহসৌ মযি ময্যমাযং

রমাপতির্শ্রমনোভিরামঃ।

ইতি স্ম সর্বাঃ কলিতাভিমানা

নিরীক্ষ্য গোবিন্দ তিরোহিতোহভূঃ ॥ 67.2 ॥

রাধাভিধাং তারদজাতগর্ভা -

মতিপ্রিয়াং গোপবধুং মুরারে।

ভরানুপাদায় গতৌ বিন্দুরং

তযা সহ স্মৈররিহারকারী ॥ 67.3 ॥

তিরোহিতেহথ ংরযি জাততাপাঃ

সমং সমেতাঃ কমলাযতাক্ষ্যঃ।

বনে বনে ংরাং পরিমার্গযন্ত্যে

বিষাদমাপূর্ভগবন্নপারম্ ॥ 67.4 ॥

হা চূত হা চম্পক কর্ণিকার

হা মল্লিকে মালতি বালরল্যঃ।

किं रीम्फितो नो हृदयैकचोरः
इत्यादि तासुप्ररणा रिलेपुः ॥ 67.5 ॥

निरीम्फितोहयं सथि पक्कजाम्फः
पुरो ममेत्याकुलमालपत्ती।
एरां भारनाचम्फुषि रीम्फ्य काचिं
तापं सथीनां द्विगुणीचकार ॥ 67.6 ॥

एरदात्त्रिकान्ता यमुनातटांते
तरानुचक्रुः किल चेष्टितानि।
रिचित्य डूयोहपि तथैर मानां
एरया रिमुक्तां ददृशुश्च राधाम् ॥ 67.7 ॥

ततः समं ता रिपिने समन्तां
तमोरतारारधि मार्गयन्त्यः।
पुनरिमिश्रा यमुनातटांते
डूशं रिलेपुश्च जगुर्गुणांस्ते ॥ 67.8 ॥

तथा र्याथासङ्कुलमानसानां
ब्रजाङ्गनानां करुणैकसिक्को।
जगत्त्रयीमोहनमोहनात्मा
एरं प्रादुरासीरथि मन्दहासी ॥ 67.9 ॥

सन्दिग्धसन्दर्शनमात्त्रकान्तं
एरां रीम्फ्य तन्त्र्यः सहसा तदानीम्।
किं किं न चक्रुः प्रमदातिभारां
स एरं गदां पालय मारुतेश ॥ 67.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तषष्टितमं दशकं समाप्तम् ॥